शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page – 74 –78

भक्तिकालीन साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा का विस्तार एवं विश्लेषण

डॉ. रेखा नागर
सहायक प्राध्यापक-हिन्दी
भे. ला. पा. शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महू (इंदौर, मध्यप्रदेश)

Received– 27June - 2026
Accepted-29 June- 2026
Published– 30 June 2026
Corresponding Author-
डॉ. रेखा नागर
सहायक प्राध्यापक-हिन्दी
भे. ला. पा. शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महू (इंदौर, मध्यप्रदेश)
DOI-https://doi.org/10.67275/SU.2026.041420

Funding Policy-
'Shodh Utkarsh' is an independent journal and receives no financial support or grant from any public, commercial, or not-for-profit organization.
वित्त पोषण नीति-
'शोध उत्कर्ष' एक स्वतंत्र पत्रिका है। इसे किसी भी सार्वजनिक, वाणिज्यिक या गैर-लाभकारी संगठन से कोई वित्तीय सहायता, अनुदान या फंडिंग प्राप्त नहीं होती है।
Copyright Notice -
© 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC-BY 4.0).
कॉपीराइट सूचना-
© २०२६ लेखक। यह कार्य क्रिएटिव कॉमन्स अ Attribution 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस (CC-BY 4.0) के अंतर्गत लाइसेंस प्राप्त है।

OPEN ACCESS
Shodh Utkarsh
CC-BY 4.0

सारांश- भारतीय ज्ञान परंपरा एक विशाल नदी की तरह है जो सदियों से प्रवाहमान है। यह एक ऐसी व्यापक और समृद्ध परंपरा है जो वेदों, उपनिषदों, महाकाव्यो, शास्त्रों और लोक साहित्य के माध्यम से विकसित हुई है। मध्यकाल तक आते-आते यह परंपरा संत साहित्य के रूप में जन साधारण के बीच पहुंचने लगी। संत कवियों ने समाज में धर्म, नैतिकता, प्रेम और ज्ञान का संदेश दिया। उन्होंने ज्ञान को जटिल धार्मिक अनुष्ठानों से मुक्त कर सहज, सरल और व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत किया। संत कवियों ने ज्ञान, भक्ति और सामाजिक सुधार को केन्द्र में रखकर साहित्य की रचना की। **कबीर, तुलसी, मीराबाई, सूरदास, रैदास, गुरु नानक, नामदेव, सेना, धन्ना** जैसे संतों ने लोकभाषा में अपनी रचनाएँ लिखकर इस समृध्द ज्ञान परंपरा को केवल विद्धानों तक सीमित न रखते हुए जन साधारण तक पहुंचाने का कार्य किया। भक्तिकालीन साहित्य ने जांति - पाँति, धार्मिक पाखंड और सामाजिक विषमताओं पर प्रहार करते हुए प्रेम, समानता और भारतीय एकात्मकता तथा भाईचारे का संदेश दिया। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी संत साहित्य की शिक्षाएं, उसका नैतिकतापरक दृष्टिकोण प्रासंगिक बना हुआ है।
इसी कारण भक्तिकालीन साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा की सहिष्णुता, सामाजिक समरसता और नैतिक मूल्यों को पुनः स्थापित करने में सहायक रहा है।
प्रस्तुत शोधपत्र में "भक्तिकालीन साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा के विस्तार का विश्लेषण किया गया है। इस विषय के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भक्तिकालीन साहित्य में न केवल आध्यात्मिक जागरूकता को बढ़ावा दिया गया अपितु 7सामाजिक और बौध्दिक क्रांति में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है।
बीज शब्द :- *काव्य , भारतीय, ज्ञान, परंपरा, भक्तिकाल, संत काव्य, साहित्य, भक्तिकालीन,भक्तकवि, काव्य धारा ।*

भूमिका – संपूर्ण विश्व में भारत ही एक ऐसा देश है जिसकी ज्ञान परंपरा के मूल सिद्धांतों में मानव जाति के शारीरिक, नैतिक, बौध्दिक और आध्यात्मिक विकास के सभी चरणों का उचित समायोजन किया गया है। यह एक हाड़मांस के प्राणी को एक परिपूर्ण मानवीय गुणों से युक्त, संवेदनशील और सामाजिक मनुष्य बनाने की क्षमता रखती है। भारतीय ज्ञान परंपरा और भक्तिकाल आपस में गहराई से जुड़े हैं, जहाँ भक्तिकाल ने भारतीय ज्ञान परंपरा के आध्यात्मिक और दार्शनिक विचारों को जन-जन तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। भक्तिकाल जो कि मध्यकाल (लगभग 14वीं से 17वीं शताब्दी) के दौरान फला-फूला और वेदों, उपनिषदों, महाकाव्यो आदि में निहित ज्ञान को संतों और कवियों के माध्यम से आम लोगों की स्थानीय भाषा में उनके तक पहुंचाने में पूर्ण सफल रहा। 14वीं और 15वीं शताब्दी में बाहरी आक्रमणकारियों और अन्य सामाजिक उथल–पुथल के दौर में लोगों के हताश और निराश मन में भक्ति और उत्साह का संचार संत कवियों ने किया। दूसरे शब्दों में कहें तो भक्तिकालीन साहित्य ने न केवल भगवत भक्ति और ज्ञान को बढ़ावा दिया बल्कि प्रेम, समानता और सामाजिक समरसता जैसे मूल्यों पर भी जोर दिया है, जो भारतीय ज्ञान परंपरा का एक अभिन्न हिस्सा रहे हैं। यह प्रसिद्ध उक्ति यहाँ सटिक बैठती है कि-

'भक्ति द्रविड़ उपजी, लाये रामानंद ।
प्रकट किया कबीर ने, सप्त द्वीप नौ खंड'

अर्थात, भक्ति आंदोलन दक्षिण भारत से प्रारंभ हुआ और उत्तर भारत तक पहुंचकर एक विशाल आंदोलन बन गया, जिसने वैदिक परंपराओं और आध्यात्मिक विचारों को एक नया रूप दिया। भक्तिकाल हिन्दी साहित्य के इतिहास का ऐसा स्वर्णिम काल है जिसमें मानवीय चेतना की उत्कृष्ट साधना का संचार होता दिखाई देता है। भक्तिकाल के जितने भी संत–भक्त कवि हुए उन सभी ने मनुष्यता को सर्वोपरि दिखाने का अथक प्रयास किया और यही भावभूमि भारतीय ज्ञान परंपरा का आधार स्तंभ है। सगुण और निर्गुण मार्गी कवियों ने

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page – 74 –78

मनुष्यता को कलंकित करने वाले बिंदुओं की पहचान की और उन पर लगातार प्रहार किया। अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि मनुष्यता की महान साधना का काव्य जिसे भक्ति काव्य के नाम से अभिहित किया जाता है, उसके स्रोतों की पड़ताल करने पर हमें प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा के महत्वपूर्ण स्रोतों की ओर ले जाने का कार्य करती है। यही कारण है कि ज्ञान की वह अविरल धारा जो प्राचीन काल से चली आ रही है, वह भक्तिकालीन कविता में अपने चरम रूप में दिखाई देती है |

भक्तिकालीन साहित्य का परिचय

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार भक्तिकाल का सही समय संवत 1375 से 1700 तक है, अर्थात् सन् 1318 से 1643 ई० माना गया है और अधिकांश विद्वानों की भी इसमें सहमति है

भक्तिकालीन साहित्य की बात की जाए तो इसमें विविधता दिखाई देती है जो इस प्रकार है|

इस काल में भक्ति काव्य की दो धाराएँ देखने को मिलती —

1. निगुर्ण भक्ति धारा
2. सगुण भक्ति धारा

निर्गुण भक्ति धारा की पुनः दो शाखाएँ बनी -

1. ज्ञानमार्गी शाखा
2. प्रेममार्गी शाखा

इसी प्रकार सगुण भक्ति धारा को भी दो शाखाओं में विभाजित किया गया है-

1. रामभक्ति शाखा
2. कृष्णभक्ति शाखा

उपर्युक्त भक्तिधाराओं और भिन्न-भिन्न शाखाओं में जिन भक्तकवियों ने साहित्य लेखन किया या उनके शिष्यों (अनुयायियों) व्दारा संत कवियों की वाणी को लेखनीबद्ध किया गया है उसमें भारतीय ज्ञान परंपरा का गहराई से चिंतन, मनन व समावेश हुआ दिखाई देता है। भक्तिकालीन संत कवियों की रचनाओं में भारतीय ज्ञान परंपरा का विस्तार किस प्रकार हुआ है यह उदघाटित करने से पहले भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल सिध्दांत और क्षेत्र क्या है यह जानना आवश्यक है |

भारतीय ज्ञान परंपरा - परिचय

भारतीय ज्ञान परंपरा ज्ञान की वह समृध्द और विविध धारा है जो वेदों, उपनिषदों, शास्त्रों और संतों के माध्यम से सदियों से चली आ रही है। इसमें न केवल दार्शनिक और आध्यात्मिक चिंतन शामिल है, बल्कि व्यावहारिक विज्ञान, सामाजिक और नैतिक मूल्य भी शामिल है। इस परंपरा में प्रयोग, अवलोकन और अनुभवों पर आधारित वैज्ञानिक खोजों का एक लंबा इतिहास है जिसमें जीव विज्ञान, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, चिकित्सा, खगोल, और गणित जैसे क्षेत्र शामिल है। यह जीवन की समग्र समझ प्रदान करती है, जिसमें आध्यात्मिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण दोनों का एकीकरण है।

भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख सिद्धांत एवं क्षेत्र

वेद- वेद हमारी ज्ञान परंपरा का आधार है जिसमें ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद शामिल है। इसमें धार्मिक ज्ञान के अलावा विज्ञान, गणित चिकित्सा और दर्शन तत्व शामिल है।

उपनिषद – ये वैदिक चिंतन के आगे की कड़ी है और ज्ञान की जिज्ञासा को तर्क और अनुभव के माध्यम से विस्तार देती हैं। देखा जाए तो वेदो का सरलीकरण या व्याख्या उपनिषदों में होती है।

दर्शन - दर्शनशास्त्र भी भारतीय ज्ञान परंपरा का अभिन्न अंग है हमारे यहाँ छ: दर्शन है जैसे- सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत । ये समस्त दर्शन ज्ञान की विभिन्न शाखाओं और जीवन के दृष्टिकोण को दर्शाते हैं।

अनुभव और तर्क – भारतीय ज्ञान परंपरा वास्तव में अनुभव, अवलोकन, प्रयोग और कठोर विश्लेषण पर आधारित है। भारतीय ज्ञान परंपरा उन विदेशियों के लिए करारा जवाब है जो भारत को मदारियों का या जादू टोने का देश कहते हैं।

समग्रता – इसमें औध्यात्मिकता और विज्ञान का गहरा एकीकरण है, जिसमें मानव कल्याण पर ध्यान केन्द्रित किया गया है।

सामाजिक और नैतिक पहलू - यह सर्वविदित है कि ज्ञान का उद्देश्य न केवल आध्यात्मिक उन्नति है अपितु सभी प्रकार के बंधनों से मुक्ति है, जो सामाजिक उद्देश्यों से भी जुड़ा है |

विश्व कल्याण – भारतीय ज्ञान परंपरा 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' जैसे संदेशों के माध्यम से विश्व कल्याण को बढ़ावा देती है। इसमें समस्त विश्व को एक परिवार मानने के भाव निहित है। साथ ही भारतीय ज्ञान परंपरा सबके सुख की कामना करती है।

इस प्रकार हम देखते है कि भारतीय संस्कृति और अध्यात्म का मूल हमे भारतीय ज्ञान परंपरा में देखने को मिलता है। यदि आधुनिक संदर्भ में भी इसके महत्व को देखा जाए तो यह पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के साथ जोड़ने के अवसर प्रदान करती है, जिससे नए अविष्कार संभव होते हैं। इसके साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति. (NEP) 2020 में भी भारतीय ज्ञान परंपरा को एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में स्वीकार किया गया है जो छात्रों में सांस्कृतिक पहचान और आत्मविश्वास पैदा करता है |

'भक्तिकालीन साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा'

भक्तिकालीन साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा किस प्रकार पल्लवित और पुष्पित हुई तथा मध्यकाल के पूर्व बहुत धीमी गाति से प्रवाहित हो रही भारतीय ज्ञान परंपरा को किस प्रकार भक्तिकालीन साहित्य ने चरमसीमा तक पहुंचाने का कार्य किया, इसका विश्लेषण करने के लिए भक्तिकाल के प्रसिद्ध संत कवियों की वाणी और उनकी काव्य रचनाओं का आंकलन करना होगा|

संत कबीरदास-कबीरदास निर्गुण भक्ति काव्यधारा की ज्ञानमार्गी शाखा के अग्रणी कवि है। भारतीय ज्ञान परंपरा के वे केवल पक्षधर ही नहीं बल्कि प्रबल संवाहक भी है। जैसे कि सब जीवों में एक ही ईश्वर का रूप देखना, जाति-पांति को न मानना, ईश्वर भक्ति के लिए निर्मल हृदय से सुमीरण करना, बाह्य आडंबरों का विरोध करना, सदमार्ग पर चलते हुए समाज के दीन-दुखियों के प्रति समर्पण और दया का भाव रखना, पांडित्य की बजाय अपने मन का निश्छल और प्रभु प्रेम में लीन होना आदि

कबीर कहते हैं कि----

"पोथी पढ़ि- पढ़ि जग मुआ,पंडित भया ना कोय ?
ढाई आखर प्रेम का पढे सो पंडित होय "

इसी प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा की अध्दैतवादी विचारधारा को अपनाते हुए कबीर कहते है कि ईश्वर एक है, वह निर्गुण है और सभी में व्याप्त है।

"मोको कहाँ ढूंढे रे बंदे मै तो तेरे पास में।"

भारतीय ज्ञान परंपरा गुरु के महत्व और गुरुमहिमा का गुणगान करती है और कबीरदास भी अपने गुरु को ईश्वर से भी बढ़कर स्थान देते हैं —

"गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागू पाँय।
बलिहारी गुरु आपने, जिन गोविंद दियो बताय"

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page – 74 –78

कबीर अपनी वाणी से देश और देशवासियों को एकता के सूत्र में बांधने का प्रयास करते हुए नजर आते हैं। वे उन सभी आडंबरों और रीति-रिवाजों तथा जातिवाद को नकारते है जो आपसी वैमनस्य का कारण बनते हैं ।इसलिए तो कबीर कहते हैं कि ----

"जाति न पूछो साधु की,पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का,पड़ा रहन दो म्यान ।"

कबीरदास ने कभी किसी एक समाज का समर्थन नहीं किया। चाहे हिंदू हो या मुसलमान उन्होंने दोनों की रूढ़ियों और धार्मिक आडम्बरो तथा धर्म के नाम पर हो रहे पाखंड का विरोध करते हुए कटाक्ष किया है कि---

"माला फेरत जुग गया,गया न मन का फेर ।
कर का मनका डारि के, मन का मनका फेर ।"

इसी क्रम में भारतीय ज्ञान परंपरा का समर्थन करते हुए कबीरदास मनुष्य को अहंकार और लालच से बचने की सलाह देते हैं और कहते हैं कि ये प्रवृत्तियां आध्यात्मिक उन्नति व भक्तिमार्ग में बाधा उत्पन्न करती है जैसे---

"बड़ा हुआ सो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर ।
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर ।"

ज्ञानमार्गी शाखा में ***गुरु नानकदेव, रैदास, दादूदयाल, सुंदरदास और मलूकदास*** की रचनाएँ भी इसी परंपरा का निर्वहन करती है।

मलिक मोहम्मद जायसी-निगुण भक्ति काव्यधारा में प्रेममार्गी शाखा का प्रतिनिधित्व करने वाले और *'प्रेम के पीर'* कहे जाने वाले कवि जायसी ने ईश्वर तक पहुंचने के लिए प्रेम के मार्ग को अपनाया और भौगोलिक सीमाओं को तोड़कर एकता और भाईचारे का संदेश दिया। हिन्दी के प्रेमाख्यानकारों में जायसी का स्थान सर्वोच्च है उनका *'पद्मावत'* काव्य हिन्दी जगत से अपनी प्रबंध पटुता की अद्भुत क्षमता के लिए अद्वितीय है। उनका संयोग और वियोग श्रृंगार फारसी की मनसवी शैली पर आधारित होते हुए भी हिन्दू संस्कृति को समेटे हुए है। जहां पद्मावत में प्रेमी बनकर ईश्वर रूपी प्रेयसी को पाने का प्रयास किया है वहीं *'अखरावट'* में सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही ब्रम्ह और प्रकृति की सैद्धांतिक विवेचना की है। इस रचना में कवि की आध्यात्मिक विचारधारा को समझा जा सकता है। जायकी नारियों के प्रति पूर्ण श्रद्धा और सम्मान का भाव रखते हुए उनके सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहते हैं —--

"माथे कनक गागरी, आवहिं रूप अनूप ।
जेही के अस पनिहारी, सो रानी केहि रूप।"

अर्थात पनघट पर आई हुई स्त्रियों के मस्तक पर सोने की गगरी बहुत ही शोभायमान लगती है। ऐसी अनुपम सौन्दर्य वाली नारियां मन को मोहित करती है। जिस देश की सामान्य नारिया इतनी रूपवती है, उस देश की रानी कितनी रूपवती होगी। यह अनुमान लगाना मुश्किल है ।

प्रेम के माध्यम से जायसी ने परमात्मा को प्राप्त करने की ओर संकेत किया है कि उसे प्राप्त करना इतना आसन नहीं है।

" नवों खंड नव पौरी, औ तहं बज्र के व्दार ।
चारि बसेरे सौ चढ़े, सत सौं उतरे पार ।"

अर्थात सिंहलगढ़ के नौ खण्डों पर नौ द्वार बने हुए है जिन पर वज्र के समान कठोर किवाड़ लगे हुए है। उन पर चार पड़ाव है, जो सच्चे मन से वहां जायेगा, वही पहुंच पायेगा 1 सूफी काव्यधारा में मुल्ला दाऊद, चन्दायन आदि की रचनाओं के साथ कुतुबन की रचना *"मृगावती"* भी साहित्य में विशेष स्थान रखती है।

महाकवि तुलसीदास

भक्तिकालीन साहित्य में तुलसीदास का साहित्यिक योगदान अतुलनीय है। तुलसी ने 'रामचरित मानस' जैसे कालजयी महाकाव्य की रचना के माध्यम से अवधि भाषा के इस महाकाव्य को जन-जन तक पहुंचा दिया। तुलसीदास ने अवधि और ब्रज दोनो भाषाओं में कई उत्कृष्ट रचनाएँ की है। जैसे *'रामचरित मानस, विनय पत्रिका, कवितावली, हनुमान चालीसा, हनुमान बाहुक, गीतावली''* आदि। तुलसी के काव्य में भक्ति भावना के साथ साथ सामाजिक चेतना, सदाचार और लोक कल्याण के उपदेश सीधे भारतीय ज्ञान परंपरा से जोड़ते है। तुलसी को वैसे भी लोक का कवि कहा जाता है। उनकी रामचरित मानस तो सामाजिक, राजनीतिक और पारिवारिक दायित्वों के सफल और नैतिकतापूर्ण निर्वहन का सटीक उदाहरण है। तुलसी काव्य में समन्वय की भावना सर्वत्र विद्यमान है, तभी तो उनके राम कहते कि-----

"शिव द्रोही मम दास कहावा।
सो नर मोहि सपनेहुँ नहि भावा।।"

इस प्रकार वे शैव और वैष्णव के भेद को समाप्त कर समन्वय स्थापित करने का प्रयास करते है। सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन का उच्चतम आदर्श जन-मानस के सम्मुख रखना ही उनके काव्य का मुख्य उद्देश्य था। तभी तो वे कहते है कि---

"मुखिया मुख सो चाहिए, खान-पान को एक
पालहि-पोषहि सकल अंग, तुलसी सहित विवेक"

इसके साथ ही एक आदर्श शासक या सरकार वही है जो प्रजा को सुख- सुविधा से युक्त रखे 1

"जासु राज प्रिय प्रजा दुखारि ।
सो नृप अवसि नरक अधिकारी ।।"

एक सुखी और संतुष्ट जीवन का परिचय देते हुए तुलसी कहते हैं कि —---

"नाहि दरिद्र सम दुख जग माही ।
संत मिलन सम सुख जग नाही ।।

इस प्रकार तुलसीदास न केवल हिन्दी साहित्य को समृद्ध करते हुए भक्ति तक सीमित थे बल्कि उनमें गहरी सामाजिक चेतना थी। उनकी रचनाओं में भारतीय सभ्यता और संस्कृति का पूर्ण चित्रण देखने को मिलता है । 'रामचरित मानस' आज भी देश की जनता को आदर्श जीवन के निर्माण की प्रेरणा प्रदान करता है जो भारतीय ज्ञान परंपरा का ही अंग है।

इसके अतिरिक्त *अग्रदस की रामाष्टायाय, नाभादास की भक्तमाल, ईश्वरदास की भरत मिलाप और केशवदास की राम चंद्रिका* में भी भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की झलक देख सकते है। इस प्रकार विभिन्न कवियों द्वारा रचित रामकाव्य भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है और उसे भारतीय ज्ञान परंपरा से जोड़ता है।

सूरदास-भक्तिकाल मे सगुण भक्तिधारा की कृष्णभक्ति शाखा के अग्रणी कवि के रूप में सूरदास का नाम आता है। उन्होंने अपनी रचनाओं की प्रस्तुति *"श्रीमद्भागवत"* से प्रेरणा लेकर की है, और यह ग्रंथ तो भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख स्रोतों में से एक है। वात्सल्य और प्रेम के अलावा सूरदास ने अपने काव्य में गोचारण युगीन संस्कृति की श्रेष्ठ अभिव्यक्ति की है जो अन्यत्र दुर्लभ है। वात्सल्य, प्रेम (संयोग व वियोग) और ज्ञान व भक्ति का अद्भुत समन्वय हमे सूर के काव्य में मिलता है जिसमें भारतीय सास्कृतिक परिवेश तथा ज्ञान व भक्ति का अद्भुत संगम है 1 कुछ उदाहरणों से रसे स्पष्ट किया जा सकता है

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page – 74 –78

जैसे माता और बालक का वात्सल्यमय प्रेम इन पंक्तियों में देख सकते हैं-

"यशोदा हरि पालने झुलावे ।
हलरावें, दुलरावै, मल्हावे जोई सोई कछु गावै ।"

इसी प्रकार एक माँ के निश्छल मन और निःस्वार्थ प्रेम को इन पक्तियों के माध्यम से समझा जा सकता है कि जब बालक सुंदर, स्वस्थ अवस्था में माँ के सामने खेलता है तो माँ का हृदय आनंद और वात्सल्य से भर जाता है---

" सोभित कर नवनीत लिये।
घुटरनि चलत रेनु तन मण्डित,
मुख दधि लेप किये।
चारू कपोल लोल लोचन,
गोरोचन तिलक किये।।"

इसी प्रकार विनय के पद में कवि कहते कि

"मेंरो मन अनंत कहाँ सुख पावे ?
जैसे उड़ी जहाज को पंछी, फिरि जहाज पे आवै ।

इस पद में कवि अपनी मातृभूमि या अपने देश के प्रति प्रेम को दर्शाते है कि चाहे सारा विश्व घूम लो लोकिन असली सुख, शांति और अपनापन स्वदेश में ही मिलता है। देश की मिट्टी की खूशबू का कोई पर्याय नहीं है।सगुण भक्ति का महत्व बताते हुए सूरदास भ्रमरगीत सार में उद्धव - गोपी संवाद के माध्यम से यह स्पष्ट करना चाहते है कि गाँव की कोई युवती या किशोरियां जिन्हे प्रकाण्ड पंडित उद्धव अनपढ़ गवार समझकर पढ़ाने या ब्रह्मज्ञान देने आए थे l वे श्रीकृष्ण के प्रेम में लीन और पूर्ण समर्पित गोपियों के निश्छल प्रेम और भोले किंतु तर्कपूर्ण प्रश्नों के सामने निरुत्तर हो जाते है और हार मानकर लौट जाते है। गोपियां कहती है-----

" उधो ! मन नाहीं दस बीस ।
एक हुतो सो गयौ स्याम संग,
को अराधे ईस।।

ऐसे पदों के माध्यम से सूरदास भारत के उन लाखों सगुण भक्तों को यह विश्वास दिलाते है कि निर्गुण भक्ति जो कि बड़ी कठिन है और सामान्य व्यक्ति उसे प्राप्त करने में समर्थ नहीं है वे सगुण भक्ति के द्वारा भी ईश्वर को प्राप्त कर सकते हैं।

रसखान-रसखान, जिन्हें उनका धर्म आमतौर पर अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य आराध्य की स्तुति करने की इज़ाजत नहीं देता, वह भी कृष्ण के जीवन से प्रभावित होकर कृष्णभक्ति के रंग मे पूर्णतः रंग जाते हैं और जाति बंधन को तोड़ते हुए अपने मन के उदगारों को भक्ति के माध्यम से अपनी रचनाओं में व्यक्त करते हैं। वे कहते है कि—---

" मानुष हौ तो वही रसखान
बसौ संग गोकुल गाँव के ग्वारन ।"

और इसके बाद गाकुल की भूमि के प्रति उनका समर्पण देखिए कि यदि पशु अर्थात गाय बनूँ तो भी नंद की गायों के साथ-वन में विचरण करू ,यदि पक्षी बनूँ तो कालिन्दी के किनारे कदम्ब के पेड़ की डाल पर बैठूं। प्रेम और भक्ति की पराकाष्ठा देखिए कि यदि पत्थर (निर्जीव वस्तु) बनूँ तब भी श्रीकृष्ण की जन्मभूमि में रहूं -

" पाहन हौं तो वहीं गिरी को,
जो कियो हरि छत्र पुरन्दर धारन।"

इससे बढ़कर एक भक्त का अपने आराध्य के प्रति और क्या समर्पण हो सकता है। रसखान कहते है कि प्राणों की सार्थकता या रूप का सौन्दर्य तभी सार्थक होगा जब वह अपने प्रभु को रिझा सके l वही सिर सौभाग्यशाली है जो श्री कृष्ण के चरणों का स्पर्श कर सके और अंग वहीं श्रेष्ठ है जिसने उनका स्पर्श किया है ब्रजभाषा के लालित्य में सूर कहते है---

"प्रान वही जु रहे रिझी वा पर,
रूप वही जिही वाहि रिझायो ।
सीस वही जिहि वे परसे पग,
अंग वही जिहि वा परसायो ।"

> इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतीय ज्ञान परंपरा जिसमें भक्त और भगवान का जो संबंध और समर्पण दिखाया गया है उसका विश्लेषण भक्तिकाल के इस कृष्णभक्त कवि के भावों और लेखनी में स्पष्ट झलकता है।

मीराबाई-भक्तिकालिन काव्य में नारी प्रतिनिधित्व के रूप में मीराबाई का नाम सामने आता है। 16वीं शताब्दी की मीरा पूर्वकालीन नारी की शक्ति (मैत्रेयी, गार्गी, अपाला, घोषा आदि) को पुनः जागृत करने का कार्य करती है।भारतीय ज्ञान परंपरा में नारी पक्ष को देखा जाए तो पूजनीय और वंदनीय रूप में हमारे सामने आती है, लेकिन कालांतर में विदेशी आक्रमणों के कारण घर की चारदिवारी में या पर्दे में रहने को मजबूर किया गया। कुछ अपवादों को छोड़ दे तो उसी काल में नारी की प्रतिभा, मान–सम्मान और शक्ति का दमन हुआ। बाद में समय अनुकूल होने के बाद भी ये प्रथाएँ चलती रही परंतु अब वैसी स्थिति नहीं है। यहाँ मीराबाई के संदर्भ में बात हो रही है तो मीराबाई ने विपरित परिस्थितियों में सामाजिक बंधनों को तोड़ते हुए डंके की चोट पर सार्वजनिक स्थानों और मंदिरों में कृष्ण-भजनों को गाया और एक समर्पित कृष्ण भक्त (बल्कि उनकी प्रेयसी) के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की। इस प्रकार मीरा का चरित्र भारतीय ज्ञान परंपरा को भक्तिकाल में विस्तार देते हुए परवर्ती युग में प्रवेश कराता है।

मीरा कहती हैं----

"मेरो तो गिरधर गोपाल, दूसरों न कोई ।
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई ।।"

कई उलाहनाओं, अड़चनों और विरोधो के बावजूद मीराबाई ने अपना मार्ग नही छोड़ा वह कृष्ण भक्ति में लीन हो निरंतर उनके भजन गाती रही ।

"बसौ मेरे नैनन में नंदलाल ।
मोहनि मूरति सांवरि सूरति,
नैणा बने विशाल बसो मेरे---

इसके अतिरिक्त अष्टछाप के कवियों ने भी सगुणभक्ति धारा के अंतर्गत कृष्ण भक्ति शाखा का समर्थन करते हुए हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया और भारतीय ज्ञान परंपरा के सामाजिक, नैतिक और अध्यात्मिक पक्ष को पुनर्जीवित करने और आगे बढ़ाने में अपना योगदान दिया।

निष्कर्ष-भारतीय साहित्य में भक्तिकाव्य का महत्वपूर्ण स्थान रहा है l भारतीय ज्ञान परंपरा और भक्तिकालीन साहित्य इन दोनों के मध्य घनिष्ठ संबंध रहा है। दोनों ही हमारी भारतीय संस्कृति और इतिहास की बेजोड़ कड़ी रहे हैं। भक्तिकालीन साहित्य ने भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न पक्षों को बेहतरीन तरीके से दीप्तिमान किया है। वेदों की गहनता, उपनिषदों की गूढता तथा पुराणों के सांस्कृतिक गौरव को अवधि और ब्रजभाषा जैसी लोक भाषाओं के माध्यम से ज्ञान और भक्ति से जोड़ा । भक्तिकाल में निर्गुण व सगुण भक्ति के माध्यम से भक्ति का एक विस्तृत रूप देखने को मिलता है जो हमें भारतीय ज्ञान परंपरा से जोड़ता है।

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page – 74 –78

जहाँ कबीर निर्गुण भक्ति के उपासक है और उनके दोहों में आत्मज्ञान की चमक देखने को मिलती है, वही सगुणोपासक तुलसी की चौपाइयों में धर्म और नीति का समर्पण भाव झलकता है। मीरा के भजन प्रेम और अनन्य भक्ति की छाप छोड़ते हैं, वही सूर के पदों की भक्ति मधुर रसधार बनकर बहती है।

समग्रतः भक्ति काव्य ने भारतीय संस्कृति को उच्चतर मानवीय मूल्यों और आध्यात्मिकता से तो समृद्ध किया ही है, साथ ही जीवन के नैतिक और संयमित आचरण पर भी विशेष बल दिया है। भक्त कवियों की रचनाओं में सर्वधर्म समानता, प्रेम, उपासना, गुरु महिमा, सामाजिक समसरता आदि का संदेश मिलता है 1 इस आधार पर निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि भक्तिकालीन काव्य भारतीय ज्ञान परंपरा की सर्वोत्तम उपलब्धि है।

****

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. भक्तिकाव्य में भारतीय ज्ञान परंपरा
2. लेखक – डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शर्मा
3. भक्ति का संदर्भ – देवीशंकर अवस्थी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
4. कबीर ग्रंथावली – रामकिशोर शर्मा, लोक भारती प्रकाशन, संस्करण 2018
5. भ्रमरणीत सार संपादक- रामचन्द्र शुक्ल, कमल प्रकाशन, नई दिल्ली
6. सात भारतीय संत : जीवन दर्शन और संदेश, डॉ. बलदेन बंशी, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत, नई दिल्ली
7. भक्ति आंदोलन और काव्य – गोपेश्वर सिंह वाणी-प्रकाशन, नई दिल्ल
8. सूर की काव्य चेतना – बलराम तिवारी अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद।
9. मीरा — महादेवी वर्मा, साहित्य अकादमी
10. कबीर-- हजारी प्रसाद द्विवेदी ।
11. रामकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
12. हिन्दी साहित्य का इतिहास—आचार्य रामचंद्र शुक्ल
13. नागरी प्राचारिणी सभा,वाराणसी
14. भक्ति आंदोलन का सामाजिक प्रभाव –'भगवती चरण वर्मा